United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन में लोकतांत्रिक मूल्यों की अवधारणा और अभिव्यक्ति : अणुव्रत आंदोलन के संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़
सह-आचार्य
अहिंसा एवं शांति विभाग
जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूँ (राज.)
Email: ravindrachhapara@gmail.com

कोमल
शोधार्थी
अहिंसा एवं शांति विभाग
जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूँ (राज.)
Email: komaldhaka@icloud.com

Article Received:09-08-2026 Article Modified:15-09-2026
Article Accepted:20-09-2026 Article Published:25-09-2026
DOI:10.37854/UIJMR.2026.3.3.169

सारांश

लोकतंत्र को सामान्यतः ऐसी शासन-व्यवस्था के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसमें राजनीतिक सत्ता का आधार जनता की इच्छा, सहभागिता और प्रतिनिधित्व होता है। किंतु लोकतंत्र की प्रभावशीलता केवल राजनीतिक संस्थाओं और निर्वाचन-प्रक्रिया पर निर्भर नहीं करती। लोकतांत्रिक व्यवस्था के स्थायित्व के लिए ऐसे सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों की आवश्यकता होती है जो व्यक्ति के व्यवहार, सामाजिक संबंधों तथा सार्वजनिक जीवन को दिशा प्रदान करें। स्वतंत्रता, समानता, न्याय, व्यक्ति की गरिमा, बंधुता, सहिष्णुता, सहभागिता, उत्तरदायित्व और सह-अस्तित्व लोकतांत्रिक जीवन के प्रमुख मूल्यगत आधार हैं। भारतीय संविधान की प्रस्तावना में न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुता को भारतीय गणराज्य के मूल उद्देश्यों के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है।

आचार्य तुलसी का समाज-दर्शन इस संदर्भ में विशिष्ट महत्त्व रखता है। उनके चिंतन में व्यक्ति और समाज का संबंध परस्पर निर्भरता पर आधारित है तथा सामाजिक पुनर्निर्माण का आधार व्यक्ति के नैतिक परिष्कार को माना गया है। अहिंसा, मानव-एकता, समानता, सामाजिक समरसता, सह-अस्तित्व, धार्मिक समन्वय, शिक्षा, नारी-जागरण, सामाजिक रूढ़ियों का विवेकपूर्ण परित्याग और आत्मानुशासन उनके सामाजिक चिंतन के प्रमुख आयाम हैं। अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से इन मूल्यों को व्यक्ति के दैनिक आचरण और सामाजिक जीवन से जोड़ने का प्रयास किया गया। जैन विश्व भारती संस्थान की सामग्री में अणुव्रत आंदोलन को सामाजिक दोषों के निराकरण, नवीन सामाजिक समस्याओं की रोकथाम तथा व्यक्ति के भावनात्मक एवं चेतनात्मक परिवर्तन से संबद्ध किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन में निहित लोकतांत्रिक मूल्यों का विश्लेषण किया गया है तथा अणुव्रत आंदोलन को उन मूल्यों की सामाजिक एवं नैतिक अभिव्यक्ति के संदर्भ में देखा गया है। अध्ययन में आचार्य तुलसी की मूल कृतियों, अणुव्रत संबंधी साहित्य, जैन विश्व भारती संस्थान द्वारा प्रकाशित शोध-साहित्य

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

तथा लोकतंत्र एवं लोकतांत्रिक मूल्यों से संबंधित अकादमिक स्रोतों का उपयोग किया गया है। अध्ययन की प्रकृति विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक एवं व्याख्यात्मक है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन में लोकतांत्रिक मूल्य केवल राजनीतिक व्यवस्था से संबंधित अवधारणाएँ नहीं हैं, बल्कि व्यक्ति के नैतिक जीवन और सामाजिक व्यवहार से संबद्ध मूल्य हैं। उनके चिंतन में व्यक्ति की स्वतंत्रता का संबंध आत्मानुशासन से, समानता का संबंध मानव-एकता से, सामाजिक न्याय का संबंध मानवीय संवेदना से तथा सह-अस्तित्व का संबंध अहिंसा एवं सहिष्णुता से जुड़ता है। अणुव्रत आंदोलन इन मूल्यों को व्यक्तिगत संकल्प, नैतिक अनुशासन, सामाजिक जागरण और रचनात्मक परिवर्तन के माध्यम से व्यवहारगत आधार प्रदान करता है। इस दृष्टि से आचार्य तुलसी का समाज-दर्शन लोकतांत्रिक संस्कृति के नैतिक एवं सामाजिक आधारों के अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: आचार्य तुलसी, समाज-दर्शन, लोकतंत्र, लोकतांत्रिक मूल्य, अणुव्रत आंदोलन, अहिंसा, मानव-एकता, समानता, सामाजिक समरसता, नैतिकता।

प्रस्तावना

लोकतंत्र आधुनिक राजनीतिक चिंतन की प्रमुख अवधारणाओं में से एक है। इसका सामान्य संबंध ऐसी शासन-व्यवस्था से है जिसमें राजनीतिक सत्ता की वैधता जनता की इच्छा तथा उसकी सहभागिता से संबद्ध होती है। आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रतिनिधित्व, निर्वाचन, नागरिक स्वतंत्रता, राजनीतिक समानता और जनसहभागिता को महत्त्व प्राप्त है। तथापि लोकतंत्र का वास्तविक स्वरूप केवल राजनीतिक संस्थाओं की संरचना से निर्धारित नहीं होता। लोकतांत्रिक संस्थाओं के सुचारु संचालन के लिए ऐसी सामाजिक चेतना भी आवश्यक होती है जिसमें व्यक्ति की गरिमा, स्वतंत्रता, समानता, न्याय, सहिष्णुता, उत्तरदायित्व और परस्पर सम्मान जैसे मूल्य प्रतिष्ठित हों।

भारतीय संविधान की प्रस्तावना में न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुता को भारतीय गणराज्य के मूल उद्देश्यों के रूप में स्वीकार किया गया है। बंधुता को व्यक्ति की गरिमा तथा राष्ट्र की एकता और अखंडता से संबद्ध किया गया है। इस मूल्य-संरचना से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय लोकतंत्र की संवैधानिक अवधारणा राजनीतिक व्यवस्था के साथ सामाजिक एवं नैतिक आदर्शों को भी संबद्ध करती है।

भारतीय लोकतांत्रिक जीवन की वास्तविक चुनौतियाँ केवल राजनीतिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रही हैं। सामाजिक असमानता, जातीय एवं साम्प्रदायिक विभाजन, सामाजिक रूढ़ियाँ, लैंगिक असमानता, हिंसा, भ्रष्टाचार, नैतिक अवनति तथा नागरिक उत्तरदायित्व की कमी जैसी समस्याएँ लोकतांत्रिक जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करती हैं। ऐसी परिस्थितियों में लोकतंत्र के मूल्यगत आधारों का अध्ययन आवश्यक हो जाता है।

आचार्य तुलसी का सामाजिक चिंतन इसी संदर्भ में अध्ययन की महत्त्वपूर्ण भूमि प्रस्तुत करता है। उन्होंने व्यक्ति और समाज के संबंध को सामाजिक जीवन की आधारभूत समस्या के रूप में देखा और व्यक्ति के नैतिक

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

निर्माण को स्वस्थ समाज की आवश्यक शर्त माना। उनके चिंतन में सामाजिक परिवर्तन बाह्य संस्थागत परिवर्तन तक सीमित नहीं है; उसमें व्यक्ति की चेतना, आचरण और दृष्टिकोण के परिवर्तन को भी महत्त्व प्राप्त है।

आचार्य तुलसी के सामाजिक चिंतन का व्यावहारिक पक्ष अणुव्रत आंदोलन में विशेष रूप से अभिव्यक्त हुआ। अणुव्रत ने नैतिक अनुशासन को सामान्य व्यक्ति के जीवन से जोड़ने का प्रयास किया। इसका उद्देश्य केवल धार्मिक साधना तक सीमित न रहकर सामाजिक जीवन में संयम, नैतिकता और उत्तरदायित्व की स्थापना से भी संबंधित था। जैन विश्व भारती संस्थान की सामग्री में अणुव्रत आंदोलन को सामाजिक दोषों के निराकरण तथा नवीन सामाजिक समस्याओं की रोकथाम से संबद्ध किया गया है।

आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन में अहिंसा, मानव-एकता, सामाजिक समरसता, धार्मिक समन्वय, शिक्षा, नारी-जागरण तथा सामाजिक रूढ़ियों के विरुद्ध विवेकपूर्ण दृष्टिकोण जैसे तत्व मिलते हैं। *तुलसी प्रज्ञा* में प्रकाशित शोध-साहित्य में भी उनके अहिंसा-चिंतन, सामाजिक सरोकार, सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा-दर्शन, महिला सशक्तिकरण, अणुव्रत तथा लोकतांत्रिक चिंतन के विभिन्न पक्षों का विवेचन मिलता है। इस साहित्य के आधार पर आचार्य तुलसी के विचारों को लोकतांत्रिक मूल्यों की समन्वित दृष्टि से समझने की आवश्यकता दिखाई देती है।

इस अध्ययन का केंद्रीय आधार यही है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था को केवल राजनीतिक संस्थाओं के स्तर पर समझना पर्याप्त नहीं है। उसके लिए नागरिक जीवन में ऐसे मूल्य आवश्यक हैं जो स्वतंत्रता को उत्तरदायित्व से, समानता को मानव-गरिमा से, मतभिन्नता को सहिष्णुता से तथा सामाजिक परिवर्तन को अहिंसा और संवाद से जोड़ सकें। आचार्य तुलसी का समाज-दर्शन इन संबंधों के अध्ययन के लिए एक विशिष्ट वैचारिक आधार प्रदान करता है।

परिचय

समाज-दर्शन : अर्थ एवं स्वरूप

समाज-दर्शन सामाजिक जीवन की आधारभूत संरचना, व्यक्ति और समाज के संबंध, सामाजिक मूल्यों, सामाजिक व्यवस्था तथा सामाजिक परिवर्तन का दार्शनिक अध्ययन है। समाज केवल व्यक्तियों का समूह नहीं है, बल्कि व्यक्तियों के बीच स्थापित संबंधों, व्यवहार-पद्धतियों, मान्यताओं, संस्थाओं, नियमों और मूल्यों से निर्मित एक गतिशील व्यवस्था है। व्यक्ति का जीवन सामाजिक परिवेश से प्रभावित होता है और व्यक्ति के विचार एवं व्यवहार सामाजिक जीवन को प्रभावित करते हैं।

समाज-दर्शन का मूल प्रश्न केवल यह नहीं है कि समाज किस प्रकार संगठित है, बल्कि यह भी है कि समाज किस प्रकार का होना चाहिए, उसके संगठन के आधारभूत मूल्य क्या हों तथा व्यक्ति और समाज के बीच किस प्रकार का संबंध स्थापित किया जाए। इस दृष्टि से समाज-दर्शन नैतिकता, स्वतंत्रता, समानता, न्याय, अधिकार, कर्तव्य, सामाजिक उत्तरदायित्व और सामाजिक परिवर्तन जैसे प्रश्नों से भी संबद्ध होता है।

आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन में व्यक्ति और समाज का संबंध केंद्रीय महत्त्व रखता है। उनके चिंतन में सामाजिक जीवन को केवल बाह्य संस्थाओं और व्यवस्थाओं से निर्धारित नहीं माना गया, बल्कि व्यक्ति की चेतना,

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

आचरण और नैतिकता को भी सामाजिक व्यवस्था का महत्त्वपूर्ण आधार माना गया। व्यक्ति का व्यवहार सामाजिक वातावरण को प्रभावित करता है और सामाजिक वातावरण व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। इस प्रकार व्यक्ति-निर्माण और समाज-निर्माण एक-दूसरे से संबद्ध प्रक्रियाएँ बन जाते हैं।

यही आधार समाज-दर्शन को लोकतांत्रिक मूल्यों से जोड़ता है। लोकतांत्रिक समाज में व्यक्ति की स्थिति, उसकी स्वतंत्रता, समानता, अधिकार, उत्तरदायित्व और सामाजिक सहभागिता महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। अतः समाज-दर्शन लोकतांत्रिक जीवन की सामाजिक एवं नैतिक आधारभूमि को समझने का वैचारिक माध्यम प्रदान करता है।

आचार्य तुलसी के सामाजिक चिंतन में व्यक्ति-निर्माण पर दिया गया बल इसी कारण विशेष महत्त्व रखता है। यदि सामाजिक व्यवस्था को मानवीय और मूल्याधारित बनाना है तो व्यक्ति के व्यवहार और चेतना में परिवर्तन आवश्यक है। इस दृष्टि में समाज-दर्शन का संबंध केवल सामाजिक संरचना के अध्ययन से नहीं रहता, बल्कि सामाजिक जीवन के नैतिक पुनर्गठन से भी स्थापित होता है।

लोकतंत्र : अवधारणा एवं स्वरूप

लोकतंत्र का मूल संबंध जनता की राजनीतिक सत्ता में सहभागिता से है। आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में नागरिकों को राजनीतिक सहभागिता, प्रतिनिधित्व और शासन में अपनी भूमिका निर्धारित करने के अवसर प्राप्त होते हैं। किंतु लोकतंत्र का अर्थ केवल निर्वाचन अथवा प्रतिनिधि संस्थाओं की स्थापना तक सीमित नहीं है। लोकतांत्रिक व्यवस्था की प्रभावशीलता इस बात से भी जुड़ी होती है कि नागरिकों के बीच समानता, स्वतंत्रता, सहिष्णुता, सहभागिता और उत्तरदायित्व की भावना किस सीमा तक विकसित है।

भारतीय संविधान की प्रस्तावना में न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुता को भारतीय राज्य की मूल मूल्यगत दिशा के रूप में स्वीकार किया गया है। स्वतंत्रता और समानता को परस्पर विरोधी न मानकर उनके संतुलन की आवश्यकता तथा बंधुता को व्यक्ति की गरिमा और सामाजिक एकता से जोड़ना भारतीय लोकतांत्रिक चिंतन की महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

लोकतंत्र का सामाजिक पक्ष नागरिकों के बीच संबंधों से जुड़ा है। लोकतांत्रिक समाज में मतभिन्नता स्वाभाविक है; इसलिए लोकतांत्रिक संस्कृति के लिए मतभिन्न विचारों के प्रति सहिष्णुता, संवाद और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व आवश्यक होते हैं। इसी प्रकार राजनीतिक अधिकारों की वास्तविक सार्थकता तब बढ़ती है जब सामाजिक जीवन में व्यक्ति की गरिमा और समानता को स्वीकार किया जाता है।

इस व्यापक अर्थ में लोकतंत्र को केवल शासन-पद्धति के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन की एक मूल्याधारित व्यवस्था के रूप में भी देखा जाता है। आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन को लोकतांत्रिक संदर्भ में समझने के लिए लोकतंत्र का यही व्यापक अर्थ अधिक उपयोगी है।

जैन विश्व भारती संस्थान की शैक्षणिक सामग्री में आचार्य तुलसी के चिंतन को लोकतंत्र, स्वतंत्रता, चुनाव-व्यवस्था, चुनाव-शुचिता तथा राष्ट्रीय एकता जैसे विषयों से संबद्ध किया गया है। इससे उनके चिंतन के राजनीतिक एवं नागरिक पक्ष की उपस्थिति भी स्पष्ट होती है।

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

लोकतांत्रिक मूल्य : अर्थ एवं स्वरूप

लोकतांत्रिक मूल्य वे सामाजिक, नैतिक और राजनीतिक मूल्य हैं जो लोकतांत्रिक व्यवस्था को व्यवहारगत आधार प्रदान करते हैं। इनमें व्यक्ति की गरिमा, स्वतंत्रता, समानता, न्याय, बंधुता, सहिष्णुता, सहभागिता, उत्तरदायित्व, सह-अस्तित्व तथा मतभिन्नता के सम्मान जैसे मूल्य प्रमुख हैं।

लोकतांत्रिक मूल्यों की विशेषता यह है कि ये एक-दूसरे से स्वतंत्र नहीं हैं। स्वतंत्रता को सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ना आवश्यक है। समानता का संबंध व्यक्ति की गरिमा से है। न्याय के लिए समान अवसर और भेदभाव से मुक्ति आवश्यक है। बंधुता सामाजिक संबंधों में परस्पर सम्मान और सह-अस्तित्व को आधार प्रदान करती है। इस प्रकार लोकतांत्रिक मूल्य एक परस्पर संबद्ध मूल्य-संरचना निर्मित करते हैं।

भारतीय संविधान की प्रस्तावना में न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुता का संयुक्त उल्लेख इसी परस्पर संबद्धता को व्यक्त करता है।

आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन का अध्ययन करने पर लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ कई स्तरों पर वैचारिक संबंध दिखाई देते हैं। व्यक्ति की गरिमा और आत्मानुशासन स्वतंत्रता के साथ जुड़ते हैं; मानव-एकता और सामाजिक समरसता समानता के सामाजिक पक्ष को स्पष्ट करते हैं; अहिंसा सामाजिक संबंधों में संघर्ष के अहिंसक समाधान का आधार बनती है; धार्मिक समन्वय और अनेकान्तवादी दृष्टि मतभिन्नता एवं विविधता के प्रति सहिष्णुता का आधार प्रस्तुत करती है; शिक्षा विवेक एवं सामाजिक चेतना के विकास से जुड़ती है।

इस प्रकार आचार्य तुलसी के विचारों को लोकतांत्रिक मूल्यों की सूची के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय उन्हें एक अंतर्संबंधित मूल्य-व्यवस्था के रूप में देखना अधिक उपयुक्त है।

आचार्य तुलसी : सामाजिक चिंतन का स्वरूप

आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व और कृतित्व का विकास ऐसे सामाजिक-राजनीतिक परिवेश में हुआ जिसमें भारतीय समाज परंपरा और आधुनिकता के संक्रमण से गुजर रहा था। राजनीतिक स्वतंत्रता के पश्चात सामाजिक जीवन में जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता, साम्प्रदायिकता, सामाजिक रूढ़ियाँ, स्त्री-अशिक्षा, दहेज, बाल-विवाह, आर्थिक विषमता तथा नैतिक अनुशासन से संबंधित समस्याएँ बनी हुई थीं। आचार्य तुलसी ने इन समस्याओं को केवल बाहरी सामाजिक दोषों के रूप में नहीं देखा, बल्कि व्यक्ति की चेतना और व्यवहार से भी संबद्ध किया।

उनके समाज-दर्शन में सामाजिक परिवर्तन का आधार व्यक्ति का नैतिक परिवर्तन है। व्यक्ति के भीतर संयम, आत्मानुशासन, विवेक और मानवीय संवेदना विकसित होने पर सामाजिक संबंधों में परिवर्तन की संभावना बढ़ती है। इसी के साथ सामाजिक रूढ़ियों और अन्यायपूर्ण प्रथाओं के विरुद्ध विवेकपूर्ण प्रतिरोध भी उनके सामाजिक चिंतन का महत्त्वपूर्ण पक्ष रहा।

आचार्य तुलसी के सामाजिक कार्यों में "नया मोड़" अभियान का विशेष उल्लेख मिलता है। सामाजिक रूढ़ियों, पर्दा-प्रथा, मृत्युभोज और अन्य सामाजिक आडंबरों के संबंध में उनके प्रयास सामाजिक जीवन को अधिक

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

सरल, विवेकपूर्ण और मानवीय बनाने की दिशा से जुड़े थे। यह दृष्टिकोण सामाजिक परिवर्तन को परंपरा के अंधानुकरण के स्थान पर विवेकपूर्ण मूल्यांकन से जोड़ता है।

उनके सामाजिक चिंतन का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष नारी-जागरण भी था। महिला शिक्षा, सामाजिक सम्मान और समानता के प्रश्नों पर उनके विचार सामाजिक विकास को स्त्री की सक्रिय सहभागिता से जोड़ते हैं। इसी प्रकार शिक्षा को उन्होंने केवल सूचना या औपचारिक ज्ञान का माध्यम न मानकर व्यक्ति के विकास और सामाजिक चेतना के निर्माण से जोड़ा।

इस प्रकार आचार्य तुलसी का समाज-दर्शन व्यक्ति, नैतिकता, सामाजिक संबंध और सामाजिक परिवर्तन को एक-दूसरे से संबद्ध करता है। यही संरचना उनके चिंतन को लोकतांत्रिक मूल्यों के संदर्भ में अध्ययन योग्य बनाती है।

अणुव्रत आंदोलन : अवधारणा एवं उद्देश्य

अणुव्रत आंदोलन आचार्य तुलसी के सामाजिक एवं नैतिक चिंतन की प्रमुख व्यावहारिक अभिव्यक्ति है। अणुव्रत का मूल उद्देश्य सामान्य व्यक्ति के जीवन में छोटे-छोटे नैतिक संकल्पों के माध्यम से संयम, चरित्र और उत्तरदायित्व की भावना को विकसित करना था। यह दृष्टि धार्मिक अनुशासन को व्यापक सामाजिक जीवन से जोड़ती है।

अणुव्रत का महत्त्व इस बात में है कि इसमें नैतिकता को केवल उपदेश के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया, बल्कि व्यक्ति के आचरण से जोड़ा गया। व्यक्ति अपने व्यवहार, इच्छाओं और सामाजिक संबंधों के प्रति स्वयं उत्तरदायी बने—यह अणुव्रत की कार्यदृष्टि का महत्त्वपूर्ण पक्ष है।

जैन विश्व भारती संस्थान की अध्ययन-सामग्री में अणुव्रत आंदोलन के सामाजिक उद्देश्यों में सामाजिक दोषों को दूर करना तथा नई सामाजिक समस्याओं के उद्भव को रोकना बताया गया है। इसके लिए व्यक्ति के भावनात्मक एवं चेतनात्मक परिवर्तन को महत्त्वपूर्ण माना गया है।

अणुव्रत का यह पक्ष लोकतांत्रिक मूल्यों के संदर्भ में विशेष महत्त्व रखता है। लोकतांत्रिक स्वतंत्रता व्यक्ति को निर्णय और अभिव्यक्ति का अधिकार देती है, लेकिन स्वतंत्रता के साथ उत्तरदायित्व भी जुड़ा रहता है। यदि व्यक्ति अपनी स्वतंत्रता का उपयोग सामाजिक उत्तरदायित्व, संयम और दूसरों के अधिकारों के सम्मान के साथ करता है, तो लोकतांत्रिक जीवन अधिक संतुलित बनता है।

इस संदर्भ में अणुव्रत को लोकतंत्र का पर्याय नहीं माना जा सकता, लेकिन व्यक्ति के नैतिक आत्मनियमन और सामाजिक उत्तरदायित्व के माध्यम से लोकतांत्रिक जीवन के कुछ आवश्यक मूल्यों से उसका संबंध स्थापित किया जा सकता है।

अणुव्रत और सामाजिक परिवर्तन

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

अणुव्रत आंदोलन का सामाजिक पक्ष व्यक्ति-परिवर्तन और समाज-परिवर्तन के परस्पर संबंध पर आधारित है। व्यक्ति के आचरण में परिवर्तन परिवार को प्रभावित करता है; परिवार सामाजिक वातावरण को प्रभावित करता है और सामाजिक वातावरण व्यापक सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करता है। इस प्रकार नैतिक परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन की आधारभूत प्रक्रिया से जोड़ा गया।

अणुव्रत आंदोलन ने सामाजिक रूढ़ियों, कुरीतियों और नैतिक अव्यवस्था के विरुद्ध चेतना उत्पन्न करने का प्रयास किया। आचार्य तुलसी के सामाजिक सुधार संबंधी प्रयासों में सामाजिक आडंबरों, रूढ़िगत प्रथाओं और भेदभावपूर्ण व्यवहार के विरुद्ध विवेकपूर्ण दृष्टि दिखाई देती है। सामाजिक परिवर्तन को केवल संघर्ष अथवा विरोध के रूप में न लेकर नैतिक जागरण और रचनात्मक परिवर्तन के रूप में प्रस्तुत करना इस दृष्टि की विशेषता है।

यह दृष्टिकोण लोकतांत्रिक संस्कृति के लिए महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि लोकतांत्रिक समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया संवाद, सहभागिता और सामाजिक चेतना से भी संचालित होती है। अणुव्रत की कार्यपद्धति में व्यक्ति को स्वयं से परिवर्तन प्रारंभ करने की प्रेरणा देना इसी दिशा में देखा जा सकता है।

अतः अणुव्रत आंदोलन को आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन में व्यक्ति और समाज के मध्य सेतु के रूप में समझा जा सकता है। व्यक्ति-निर्माण उसके नैतिक आधार को निर्मित करता है और सामाजिक जागरण उसके व्यापक सामाजिक प्रभाव को अभिव्यक्त करता है।

प्रमुख अवधारणाओं का अंतर्संबंध

समाज-दर्शन, लोकतंत्र, लोकतांत्रिक मूल्य, आचार्य तुलसी का सामाजिक चिंतन और अणुव्रत आंदोलन—इन सभी अवधारणाओं को पृथक-पृथक देखने के बजाय उनके अंतर्संबंध को समझना इस अध्ययन की केंद्रीय आवश्यकता है।

समाज-दर्शन व्यक्ति और समाज के संबंध तथा सामाजिक व्यवस्था के मूल्यगत आधार की व्याख्या करता है। लोकतंत्र व्यक्ति की राजनीतिक और सामाजिक सहभागिता को संस्थागत रूप देता है। लोकतांत्रिक मूल्य इस व्यवस्था को नैतिक एवं सामाजिक आधार प्रदान करते हैं। आचार्य तुलसी का समाज-दर्शन व्यक्ति के नैतिक निर्माण, सामाजिक समरसता, अहिंसा, मानव-एकता और सामाजिक सुधार पर बल देता है। अणुव्रत आंदोलन इन मूल्यों को व्यक्ति के आचरण और सामाजिक जीवन से जोड़ने का प्रयास करता है।

इस प्रकार इनके बीच निम्न वैचारिक संबंध स्थापित होता है—

व्यक्ति-निर्माण ⟶ नैतिक चेतना ⟶ उत्तरदायी आचरण ⟶ सामाजिक संबंधों में सुधार ⟶ सामाजिक समरसता ⟶ लोकतांत्रिक संस्कृति

इसी प्रकार— **अहिंसा ⟶ संवाद ⟶ सहिष्णुता ⟶ मतभिन्नता का सम्मान ⟶ सह-अस्तित्व ⟶ लोकतांत्रिक जीवन**

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

और — **मानव-एकता ⟶ समानता ⟶ सामाजिक सम्मान ⟶ भेदभाव-विरोध ⟶ सामाजिक न्याय**

लोकतांत्रिक मूल्य

इन संबंधों से यह स्पष्ट होता है कि आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन का लोकतांत्रिक पक्ष केवल उनके प्रत्यक्ष राजनीतिक विचारों में ही नहीं, बल्कि उनके व्यापक सामाजिक एवं नैतिक चिंतन में भी खोजा जा सकता है। लोकतांत्रिक मूल्यों की दृष्टि से उनका अध्ययन करने पर व्यक्ति-निर्माण, सामाजिक सुधार और नैतिक अनुशासन के बीच एक अंतर्संबंध दिखाई देता है।

शोध-समस्या

लोकतंत्र की संस्थागत व्यवस्था नागरिकों को राजनीतिक अधिकार, प्रतिनिधित्व और सहभागिता प्रदान करती है, किंतु लोकतांत्रिक जीवन की गुणवत्ता केवल संस्थागत संरचना से निर्धारित नहीं होती। लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए सामाजिक जीवन में समानता, स्वतंत्रता, न्याय, सहिष्णुता, परस्पर सम्मान, उत्तरदायित्व और अहिंसक सह-अस्तित्व जैसे मूल्य भी आवश्यक होते हैं।

आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन में व्यक्ति और समाज के पारस्परिक संबंध, नैतिक अनुशासन, अहिंसा, मानव-एकता, सामाजिक समरसता, शिक्षा, नारी-जागरण, सामाजिक सुधार और धार्मिक समन्वय जैसे तत्व प्रमुखता से दिखाई देते हैं। अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से व्यक्ति के नैतिक आचरण को सामाजिक परिवर्तन से जोड़ा गया। उपलब्ध साहित्य में आचार्य तुलसी के इन विभिन्न पक्षों पर स्वतंत्र अध्ययन उपलब्ध हैं, किंतु इन विचारों को लोकतांत्रिक मूल्यों की समन्वित संरचना में रखकर समझने का प्रश्न अभी भी महत्त्वपूर्ण बना हुआ है।

इस शोध की केंद्रीय समस्या यह निर्धारित करना है कि आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन में लोकतांत्रिक मूल्यों की वैचारिक आधारभूमि किस प्रकार निर्मित होती है तथा अणुव्रत आंदोलन इन मूल्यों को व्यक्ति और समाज के स्तर पर किस प्रकार व्यवहारगत रूप प्रदान करता है।

इसी केंद्रीय समस्या के अंतर्गत यह अध्ययन व्यक्ति की गरिमा, स्वतंत्रता, समानता, सामाजिक न्याय, अहिंसा, सह-अस्तित्व, सहिष्णुता, शिक्षा, नारी-समानता, सामाजिक समरसता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों का विश्लेषण करता है तथा यह स्पष्ट करता है कि इन मूल्यों का अणुव्रत आंदोलन से किस प्रकार संबंध स्थापित होता है।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन में निहित लोकतांत्रिक मूल्यों का विश्लेषण करना तथा अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से उनकी सामाजिक अभिव्यक्ति को स्पष्ट करना है। इस व्यापक उद्देश्य के अंतर्गत निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं—

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

1. आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन की आधारभूत अवधारणाओं तथा उसमें व्यक्ति और समाज के पारस्परिक संबंध का विश्लेषण करना।

2. आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन में निहित लोकतांत्रिक मूल्यों, विशेषतः स्वतंत्रता, समानता, व्यक्ति की गरिमा, सामाजिक न्याय और उत्तरदायित्व का विश्लेषण करना।

3. अहिंसा, सह-अस्तित्व, सहिष्णुता, मानव-एकता तथा धार्मिक समन्वय के माध्यम से आचार्य तुलसी की लोकतांत्रिक सामाजिक दृष्टि को स्पष्ट करना।

4. शिक्षा, नारी-जागरण, सामाजिक सुधार और सामाजिक समरसता के संदर्भ में आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन के सामाजिक आयामों का विश्लेषण करना।

5. अणुव्रत आंदोलन को आचार्य तुलसी के लोकतांत्रिक एवं नैतिक चिंतन की व्यावहारिक अभिव्यक्ति के रूप में विश्लेषित करना तथा व्यक्ति-निर्माण, नैतिक अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ उसके संबंध को स्पष्ट करना।

6. आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन एवं अणुव्रत आंदोलन में निहित लोकतांत्रिक मूल्यों की समकालीन प्रासंगिकता का विवेचन करना।

शोध-प्रश्न

उपर्युक्त उद्देश्यों के आधार पर प्रस्तुत अध्ययन में निम्न शोध-प्रश्नों को केंद्र में रखा गया है-

1. आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन में व्यक्ति और समाज का संबंध किस प्रकार प्रतिपादित हुआ है?
2. आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन में लोकतांत्रिक मूल्यों की वैचारिक आधारभूमि किन तत्वों से निर्मित होती है?
3. अहिंसा, सह-अस्तित्व, सहिष्णुता, मानव-एकता और धार्मिक समन्वय उनके लोकतांत्रिक सामाजिक चिंतन को किस प्रकार अभिव्यक्त करते हैं?
4. शिक्षा, नारी-जागरण, सामाजिक सुधार और सामाजिक समरसता के संबंध में आचार्य तुलसी की दृष्टि लोकतांत्रिक समाज के निर्माण से किस प्रकार जुड़ती है?
5. अणुव्रत आंदोलन व्यक्ति-निर्माण, नैतिक अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व के माध्यम से लोकतांत्रिक मूल्यों की अभिव्यक्ति किस प्रकार करता है?
6. आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन और अणुव्रत आंदोलन में निहित लोकतांत्रिक मूल्यों की वर्तमान सामाजिक संदर्भ में क्या प्रासंगिकता है?

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

शोध-प्रविधि एवं स्रोत

प्रस्तुत शोध-पत्र का स्वरूप मूलतः विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक है। अध्ययन में आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन तथा अणुव्रत आंदोलन से संबंधित उपलब्ध प्राथमिक एवं द्वितीयक साहित्य का उपयोग किया गया है। आचार्य तुलसी की मौलिक कृतियों को प्राथमिक स्रोत के रूप में ग्रहण करते हुए उनके समाज-दर्शन, लोकतांत्रिक मूल्यों, अणुव्रत, सामाजिक सुधार, अहिंसा, मानव-एकता, नारी-जागरण तथा नैतिक अनुशासन संबंधी विचारों का विश्लेषण किया गया है। विशेष रूप से 'आचार्य तुलसी का समाज दर्शन', 'अणुव्रत के आलोक में', 'नया समाज : नया दर्शन' तथा अणुव्रत संबंधी साहित्य इस विवेचन के प्रमुख आधार रहे हैं। आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन से संबंधित उपलब्ध शोध-साहित्य, शोध-पत्रिकाओं तथा अन्य प्रामाणिक द्वितीयक स्रोतों का उपयोग उनके विचारों की व्याख्या और व्यापक सामाजिक संदर्भ को समझने के लिए किया गया है। अध्ययन में वर्णनात्मक पद्धति के साथ विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए विभिन्न अवधारणाओं के अंतर्संबंध को स्पष्ट किया गया है। लोकतांत्रिक मूल्यों के संदर्भ में स्वतंत्रता, समानता, व्यक्ति की गरिमा, सामाजिक न्याय, अहिंसा, सह-अस्तित्व, सहिष्णुता, सामाजिक समरसता, नागरिक उत्तरदायित्व और नैतिक अनुशासन जैसे पक्षों को केंद्रीय विश्लेषणात्मक आधार बनाया गया है। स्रोत-सामग्री के विवेचन में आचार्य तुलसी के मूल विचारों और शोधार्थी की विश्लेषणात्मक व्याख्या के बीच अंतर बनाए रखा गया है।

आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन की आधारभूमि

आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन का मूल केंद्र व्यक्ति और समाज के पारस्परिक संबंध में निहित है। उनके चिंतन में व्यक्ति को समाज से पृथक कोई स्वतंत्र इकाई मानने के स्थान पर सामाजिक जीवन की आधारभूत इकाई के रूप में देखा गया है। व्यक्ति के विचार, आचरण और नैतिक चेतना सामाजिक वातावरण को प्रभावित करते हैं तथा सामाजिक व्यवस्था व्यक्ति के व्यक्तित्व-निर्माण को प्रभावित करती है। इस पारस्परिकता के कारण सामाजिक परिवर्तन को केवल संस्थागत अथवा बाहरी परिवर्तन के रूप में नहीं देखा जा सकता। व्यक्ति के भीतर मूल्यबोध, आत्मानुशासन और उत्तरदायित्व की चेतना का विकास सामाजिक परिवर्तन की आवश्यक आधारभूमि बनता है। आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन में इसी कारण व्यक्ति-निर्माण और समाज-निर्माण एक-दूसरे से संबद्ध प्रक्रियाएँ दिखाई देती हैं।

आचार्य तुलसी के चिंतन में सामाजिक व्यवस्था की स्वस्थता केवल नियमों और संस्थाओं पर निर्भर नहीं है, बल्कि उसके पीछे सक्रिय नैतिक चेतना पर भी निर्भर करती है। सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, संयम और आत्मानुशासन जैसे मूल्य व्यक्ति के आचरण को नियंत्रित करने के साथ सामाजिक संबंधों को भी संतुलित करते हैं। इस दृष्टि से उनका समाज-दर्शन नैतिकता को व्यक्तिगत सद्गुण तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उसे सामाजिक जीवन की गुणवत्ता से जोड़ता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था के संदर्भ में यह दृष्टिकोण विशेष महत्व रखता है, क्योंकि लोकतंत्र की संस्थागत संरचना तभी प्रभावी बनती है जब नागरिकों में अधिकारों के साथ कर्तव्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व की चेतना भी विकसित हो।

आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन में सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण आधार रूढ़ियों और जड़ सामाजिक मान्यताओं के प्रति विवेकपूर्ण दृष्टिकोण है। उन्होंने सामाजिक जीवन में प्रचलित उन परंपराओं की

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

आलोचना की जो व्यक्ति की गरिमा, स्वतंत्रता और सामाजिक समानता को बाधित करती थीं। पर्दा-प्रथा, घूँघट, स्त्रियों की शिक्षा पर प्रतिबंध, भेदपूर्ण सामाजिक व्यवहार तथा मृत्युभोज जैसी कुरीतियों के संदर्भ में उनका सुधारवादी दृष्टिकोण सामाजिक जीवन में विवेक और परिवर्तन की आवश्यकता को रेखांकित करता है। 'नया मोड़' की अवधारणा इसी सामाजिक परिवर्तन की दिशा को व्यक्त करती है, जिसमें परंपरा को केवल परंपरा होने के कारण स्वीकार करने के स्थान पर उसके सामाजिक औचित्य का परीक्षण किया जाता है।

इस प्रकार आचार्य तुलसी का समाज-दर्शन व्यक्ति की नैतिक उन्नति, सामाजिक समरसता और विवेकपूर्ण परिवर्तन के त्रिकोण पर विकसित होता है। उनके लिए सामाजिक सुधार का उद्देश्य केवल किसी एक सामाजिक प्रथा को समाप्त करना नहीं, बल्कि ऐसी सामाजिक चेतना का निर्माण करना है जिसमें मानव-मर्यादा, पारस्परिक सम्मान, सह-अस्तित्व और उत्तरदायित्व को स्वीकार किया जाए। यही आधार उनके लोकतांत्रिक चिंतन को केवल राजनीतिक व्यवस्था तक सीमित न रखकर व्यापक सामाजिक एवं नैतिक संदर्भ प्रदान करता है।

आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन में लोकतांत्रिक मूल्यों की अभिव्यक्ति

आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन में लोकतांत्रिक मूल्य किसी राजनीतिक व्यवस्था की औपचारिक विशेषताओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे व्यक्ति के नैतिक विकास, सामाजिक संबंधों की गुणवत्ता और समाज की समतामूलक संरचना से जुड़े हुए हैं। उनके चिंतन में स्वतंत्रता, समानता, मानव-गरिमा, सामाजिक न्याय, अहिंसा, सह-अस्तित्व, सहिष्णुता और उत्तरदायित्व जैसे मूल्य परस्पर संबद्ध दिखाई देते हैं। इस दृष्टि से लोकतंत्र केवल शासन की पद्धति न रहकर जीवन-पद्धति और सामाजिक आचरण का विषय बन जाता है। आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन में व्यक्ति की स्वतंत्रता को सामाजिक उत्तरदायित्व से तथा अधिकारों को नैतिक अनुशासन से जोड़ने की प्रवृत्ति स्पष्ट दिखाई देती है।

व्यक्ति की गरिमा आचार्य तुलसी के सामाजिक चिंतन का केंद्रीय तत्व है। समाज में जाति, वर्ग, संप्रदाय, लिंग अथवा अन्य आधारों पर उत्पन्न भेदभाव व्यक्ति की मानवीय प्रतिष्ठा को प्रभावित करता है। इसलिए सामाजिक जीवन में मानव-एकता की स्थापना उनके चिंतन का महत्वपूर्ण पक्ष है। उन्होंने सामाजिक विभाजनों के स्थान पर पारस्परिक सम्मान और मानवीय समानता को महत्व दिया। इस दृष्टि से उनका चिंतन लोकतांत्रिक समानता के उस आधार से संबद्ध होता है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को उसकी मानवीय गरिमा के कारण सम्मान प्राप्त होता है।

स्वतंत्रता के संदर्भ में आचार्य तुलसी का दृष्टिकोण निरंकुश स्वच्छंदता का समर्थन नहीं करता। व्यक्ति की स्वतंत्रता का संबंध विवेक, संयम और आत्मानुशासन से जोड़ा गया है। व्यक्ति को अपने निर्णयों के प्रति उत्तरदायी बनाना उनके चिंतन की विशेषता है। इस प्रकार स्वतंत्रता और अनुशासन को परस्पर विरोधी न मानकर एक-दूसरे के पूरक रूप में देखा गया है। लोकतांत्रिक जीवन में भी स्वतंत्रता की सार्थकता तभी बनी रहती है जब उसका प्रयोग दूसरे व्यक्तियों के अधिकारों और सामाजिक हितों के प्रति संवेदनशीलता के साथ किया जाए।

समानता के संदर्भ में आचार्य तुलसी का चिंतन सामाजिक जीवन में व्याप्त भेदभाव और असमान व्यवहार के विरोध से जुड़ता है। उन्होंने मानव-एकता को सामाजिक समरसता का आधार माना। उनके सामाजिक सुधार संबंधी प्रयासों में जातिगत और सामाजिक विभाजनों के स्थान पर मानवीय संबंधों को महत्व देने की प्रवृत्ति दिखाई

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

देती है। इस प्रकार समानता उनके लिए केवल बाहरी या कानूनी स्थिति नहीं, बल्कि व्यक्ति की चेतना और सामाजिक व्यवहार में स्थापित होने वाला मूल्य है।

अहिंसा आचार्य तुलसी के लोकतांत्रिक चिंतन का एक महत्वपूर्ण आधार है। हिंसा केवल शारीरिक आक्रमण तक सीमित नहीं रहती; वह विचार, व्यवहार, सामाजिक भेदभाव और शोषण के रूपों में भी अभिव्यक्त हो सकती है। अहिंसक दृष्टि व्यक्ति और समूहों के बीच संघर्ष को संवाद, संयम और पारस्परिक सम्मान के माध्यम से नियंत्रित करने की संभावना प्रस्तुत करती है। इस कारण अहिंसा सामाजिक सह-अस्तित्व और लोकतांत्रिक संस्कृति के लिए मूल्यगत आधार प्रदान करती है।

सह-अस्तित्व और सहिष्णुता का संबंध आचार्य तुलसी के चिंतन में विविधताओं की स्वीकृति से है। सामाजिक एवं धार्मिक विविधता को संघर्ष का आधार बनाने के स्थान पर पारस्परिक समझ और समन्वय की आवश्यकता पर बल दिया गया है। उनके चिंतन में असाम्प्रदायिक दृष्टि, मानव-एकता और धार्मिक समन्वय इसी व्यापक मूल्य-दृष्टि के अंग हैं। लोकतांत्रिक समाज में विभिन्न विचारों, विश्वासों और जीवन-पद्धतियों का शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व इसी प्रकार की सहिष्णु सामाजिक चेतना पर निर्भर करता है।

शिक्षा और विवेक को भी आचार्य तुलसी ने सामाजिक परिवर्तन के महत्वपूर्ण साधन के रूप में देखा। शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचनाओं का संचय नहीं, बल्कि व्यक्ति में विवेक, नैतिकता और सामाजिक चेतना का विकास है। विशेष रूप से नारी-शिक्षा और महिला-जागरण के संबंध में उनका चिंतन सामाजिक समानता की दिशा में महत्वपूर्ण है। उन्होंने महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार, शिक्षा के विस्तार और रूढ़ सामाजिक बंधनों से मुक्ति को सामाजिक विकास से जोड़ा। उनके अनुसार समाज का वास्तविक विकास तब संभव है जब समाज के सभी वर्गों को विकास की समान संभावनाएँ प्राप्त हों।

सामाजिक रूढ़ियों के प्रति आचार्य तुलसी का दृष्टिकोण भी लोकतांत्रिक चेतना से संबद्ध है। उन्होंने ऐसी प्रथाओं का समर्थन नहीं किया जो मानव-मर्यादा और सामाजिक विकास में बाधक हों। 'नया मोड़' के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने का प्रयास इसी सुधारवादी दृष्टि को व्यक्त करता है। पर्दा-प्रथा, घूँघट, स्त्रियों की सामाजिक स्थिति तथा मृत्युभोज जैसी प्रथाओं के संदर्भ में उनके प्रयास सामाजिक जीवन में विवेकपूर्ण परिवर्तन की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।

इस प्रकार आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन में लोकतांत्रिक मूल्यों की अभिव्यक्ति बहुआयामी है। व्यक्ति की गरिमा, स्वतंत्रता, समानता और सामाजिक न्याय इसके मानवीय आधार हैं; अहिंसा, सह-अस्तित्व और सहिष्णुता इसके सामाजिक आधार हैं; जबकि शिक्षा, विवेक, नैतिक अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व इसके व्यवहारगत आधार निर्मित करते हैं। इन मूल्यों का समन्वय आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन को ऐसी लोकतांत्रिक दृष्टि प्रदान करता है जिसमें सामाजिक परिवर्तन का केंद्र केवल संस्थागत व्यवस्था नहीं, बल्कि जागरूक और नैतिक व्यक्ति भी है।

अणुव्रत आंदोलन की भूमिका

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

आचार्य तुलसी के लोकतांत्रिक एवं सामाजिक चिंतन को व्यवहारिक धरातल प्रदान करने में अणुव्रत आंदोलन की महत्वपूर्ण भूमिका रही। अणुव्रत का मूल आग्रह व्यक्ति के नैतिक परिष्कार और आचरण की शुद्धता से संबंधित है। आचार्य तुलसी ने सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए केवल बाहरी संस्थागत परिवर्तन को पर्याप्त नहीं माना, बल्कि व्यक्ति के भीतर नैतिक चेतना और आत्मानुशासन के विकास को आवश्यक आधार माना। इस दृष्टि से अणुव्रत आंदोलन व्यक्ति-निर्माण से समाज-निर्माण की ओर बढ़ने वाली मूल्यपरक प्रक्रिया के रूप में सामने आता है। उपलब्ध स्रोतों में अणुव्रत को स्वस्थ सामाजिक वातावरण के निर्माण, नैतिक जागरण और मानवोन्मुख सामाजिक परिवर्तन से जोड़ा गया है।

अणुव्रत आंदोलन का एक प्रमुख पक्ष व्यक्ति के नैतिक अनुशासन से संबंधित है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में नागरिकों को अनेक अधिकार प्राप्त होते हैं, लेकिन अधिकारों का सार्थक उपयोग तभी संभव है जब व्यक्ति अपने आचरण के प्रति उत्तरदायी हो। अणुव्रत इसी उत्तरदायित्व को व्यक्तिगत जीवन से जोड़ता है। सत्य, अहिंसा, संयम, ईमानदारी और आत्मनियंत्रण जैसे मूल्यों के माध्यम से व्यक्ति को अपने व्यवहार का स्वयं निरीक्षण करने की प्रेरणा मिलती है। इस प्रकार अणुव्रत बाहरी नियंत्रण की अपेक्षा आंतरिक अनुशासन को महत्व देता है। अणुव्रत की सामाजिक प्रासंगिकता इस बात में भी दिखाई देती है कि इसका उद्देश्य केवल व्यक्तिगत सदाचार तक सीमित नहीं रहा। आचार्य तुलसी ने इसे सामाजिक जागरण और स्वस्थ समाज-निर्माण से जोड़ा। उन्होंने देश के विभिन्न क्षेत्रों में यात्रा करके नैतिक जीवन, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय मूल्यों के प्रति जनचेतना उत्पन्न करने का प्रयास किया। स्रोत-सामग्री में अणुव्रत आंदोलन को मानव-उत्थान और सामाजिक उत्थान के परस्पर संबंध के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है।

अहिंसा अणुव्रत की मूल्य-व्यवस्था का प्रमुख आधार है। अहिंसक दृष्टिकोण व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति, समुदाय और समाज के प्रति संवेदनशील बनाता है। इससे संघर्ष के स्थान पर संवाद, प्रतिरोध के स्थान पर संयम और विभाजन के स्थान पर सह-अस्तित्व की भावना विकसित होती है। लोकतांत्रिक समाज में विभिन्न विचारों और हितों के बीच मतभेद स्वाभाविक हैं; अणुव्रत की अहिंसात्मक दृष्टि इन मतभेदों को सामाजिक संघर्ष में परिवर्तित होने से रोकने के लिए नैतिक आधार प्रदान करती है।

अणुव्रत आंदोलन सामाजिक सुधार का माध्यम भी बना। आचार्य तुलसी ने सामाजिक कुरीतियों और रूढ़ियों को केवल बाहरी सामाजिक समस्या के रूप में नहीं देखा, बल्कि उनके पीछे सक्रिय मानसिकता में परिवर्तन को आवश्यक माना। 'नया मोड़' जैसे प्रयासों में सामाजिक परंपराओं का विवेकपूर्ण परीक्षण, अनावश्यक रूढ़ियों का परित्याग तथा सामाजिक संबंधों में मानवीयता की स्थापना प्रमुख रही। स्त्री की सामाजिक स्थिति, पर्दा-प्रथा, घूँघट, मृत्युभोज तथा अन्य रूढ़ियों के संदर्भ में उनके सुधारवादी प्रयास इसी दृष्टिकोण को व्यक्त करते हैं।

अणुव्रत आंदोलन का एक महत्वपूर्ण आयाम सामाजिक समरसता और धार्मिक सद्भाव से संबंधित है। अणुव्रत को किसी एक संप्रदाय की सीमित आचार-संहिता के रूप में प्रस्तुत करने के स्थान पर मानवीय नैतिकता से संबंधित आंदोलन के रूप में विकसित किया गया। स्रोत में स्पष्ट है कि विभिन्न धर्मों के लोग अणुव्रत की नैतिक भावना से जुड़ सकते थे। इस व्यापकता के कारण अणुव्रत ने धार्मिक पहचान से ऊपर उठकर नैतिक आचरण और मानव-एकता पर बल दिया।

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

राजनीतिक एवं लोकतांत्रिक जीवन के संदर्भ में अणुव्रत का महत्व नैतिक नागरिकता की अवधारणा में निहित है। आचार्य तुलसी के चिंतन में लोकतंत्र की गुणवत्ता केवल राजनीतिक संस्थाओं से निर्धारित नहीं होती, बल्कि नागरिकों और सार्वजनिक जीवन से जुड़े व्यक्तियों के आचरण से भी प्रभावित होती है। इसीलिए राजनीतिक जीवन में सत्यनिष्ठा, उत्तरदायित्व, लोकहित और नैतिक अनुशासन को महत्व दिया गया। अणुव्रत की मूल्य-दृष्टि व्यक्ति को निजी जीवन के साथ सार्वजनिक जीवन में भी नैतिक आचरण के प्रति सजग करती है। इस प्रकार अणुव्रत आंदोलन आचार्य तुलसी के लोकतांत्रिक चिंतन को व्यावहारिक आधार प्रदान करता है। व्यक्ति-निर्माण, नैतिक अनुशासन, अहिंसा, सामाजिक सुधार, धार्मिक सद्भाव और जनजागरण इसके प्रमुख आयाम हैं। लोकतांत्रिक मूल्यों की दृष्टि से इसका महत्व इस बात में है कि यह लोकतंत्र की संस्थागत संरचना के साथ उस नैतिक नागरिकता पर बल देता है जो लोकतांत्रिक जीवन को व्यवहार में सार्थक बनाती है।

विश्लेषणात्मक विमर्श

आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि उनके लोकतांत्रिक चिंतन का केंद्र राजनीतिक सत्ता की संरचना से अधिक मनुष्य का नैतिक एवं सामाजिक रूपांतरण है। उनके लिए स्वस्थ समाज की आधारभूमि ऐसा व्यक्ति है जिसमें आत्मानुशासन, विवेक, अहिंसा, सहिष्णुता और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास हुआ हो। इस कारण उनके चिंतन में व्यक्ति-निर्माण और समाज-निर्माण को अलग-अलग प्रक्रियाओं के रूप में नहीं देखा जा सकता। लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थिरता के लिए संस्थागत व्यवस्था के साथ नागरिक के नैतिक चरित्र को भी आवश्यक माना गया है।

आचार्य तुलसी के लोकतांत्रिक चिंतन की विशेषता यह है कि इसमें अधिकार और उत्तरदायित्व के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास दिखाई देता है। स्वतंत्रता को स्वच्छंदता के रूप में स्वीकार नहीं किया गया, बल्कि उसे संयम और आत्मानुशासन से संबद्ध किया गया है। इसी प्रकार समानता का आशय केवल बाहरी समान व्यवहार तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति की मानवीय गरिमा की स्वीकृति से है। इस दृष्टि से स्वतंत्रता, समानता और उत्तरदायित्व परस्पर पूरक मूल्य बन जाते हैं।

अहिंसा उनके सामाजिक चिंतन को लोकतांत्रिक सह-अस्तित्व से जोड़ने वाला महत्वपूर्ण तत्व है। विविध विचारों, विश्वासों और सामाजिक समूहों से निर्मित समाज में मतभेद स्वाभाविक हैं। आचार्य तुलसी की अहिंसात्मक दृष्टि इन मतभेदों के समाधान के लिए संवाद, संयम और पारस्परिक सम्मान का आधार प्रस्तुत करती है। इसी क्रम में सहिष्णुता और धार्मिक समन्वय सामाजिक विभाजन के स्थान पर सह-अस्तित्व की चेतना को विकसित करते हैं। आचार्य तुलसी के सामाजिक सुधार संबंधी चिंतन का विश्लेषण करने पर यह भी स्पष्ट होता है कि उन्होंने परिवर्तन को केवल कानून अथवा संस्थागत हस्तक्षेप से जोड़कर नहीं देखा। सामाजिक रूढ़ियों और कुरीतियों के परिवर्तन के लिए व्यक्ति की चेतना में परिवर्तन को आवश्यक माना गया। 'नया मोड़' के अंतर्गत सामाजिक रूढ़ियों के विरुद्ध जागरण तथा नारी की सामाजिक स्थिति में सुधार संबंधी प्रयास इस दृष्टि को स्पष्ट करते हैं। पर्दा-प्रथा, घूँघट, स्त्री-शिक्षा और अन्य सामाजिक बंधनों के संदर्भ में उनके विचार सामाजिक समानता और मानवीय गरिमा के प्रश्न से जुड़े हुए हैं।

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

अणुव्रत आंदोलन इस चिंतन को व्यवहारिक स्वरूप प्रदान करता है। अणुव्रत में व्यक्ति के नैतिक अनुशासन को सामाजिक जीवन से जोड़ा गया है। इसका उद्देश्य केवल व्यक्तिगत सदाचार की स्थापना नहीं, बल्कि ऐसे नागरिक और सामाजिक वातावरण का निर्माण करना है जिसमें सत्य, अहिंसा, संयम, उत्तरदायित्व और लोकहित जैसे मूल्य व्यवहार में दिखाई दें। इस दृष्टि से अणुव्रत आंदोलन को आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन और लोकतांत्रिक मूल्य-दृष्टि के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु के रूप में देखा जा सकता है।

तुलनात्मक रूप से यह कहा जा सकता है कि आचार्य तुलसी का लोकतांत्रिक चिंतन लोकतंत्र को केवल निर्वाचन, शासन और राजनीतिक संस्थाओं की प्रक्रिया के रूप में स्वीकार नहीं करता। उनके चिंतन में लोकतंत्र का सामाजिक आधार व्यक्ति की नैतिक चेतना, सामाजिक समानता, मानवीय गरिमा, अहिंसा और पारस्परिक सम्मान से निर्मित होता है। इस प्रकार उनके समाज-दर्शन में लोकतांत्रिक मूल्य राजनीतिक क्षेत्र से आगे बढ़कर व्यक्तिगत, सामाजिक, धार्मिक और नैतिक जीवन में अभिव्यक्त होते हैं।

समकालीन संदर्भ में प्रासंगिकता

वर्तमान लोकतांत्रिक समाज में सामाजिक विविधता, राजनीतिक मतभेद, असमानता, साम्प्रदायिक तनाव, सामाजिक भेदभाव और नैतिक अवमूल्यन जैसी चुनौतियों के संदर्भ में आचार्य तुलसी का मूल्य-आधारित चिंतन प्रासंगिक दिखाई देता है। उनके विचार लोकतंत्र की संस्थागत व्यवस्था के साथ नागरिक के नैतिक चरित्र और सामाजिक उत्तरदायित्व को जोड़ते हैं। यह दृष्टिकोण लोकतांत्रिक व्यवस्था को केवल अधिकार-आधारित व्यवस्था के स्थान पर अधिकार और कर्तव्य के संतुलन वाली सामाजिक व्यवस्था के रूप में समझने का आधार देता है।

वर्तमान सामाजिक जीवन में अहिंसा और सह-अस्तित्व का महत्व विशेष रूप से उन परिस्थितियों में दिखाई देता है जहाँ वैचारिक अथवा सामाजिक मतभेद संघर्ष का रूप ग्रहण कर सकते हैं। आचार्य तुलसी की दृष्टि संवाद, संयम और पारस्परिक सम्मान के माध्यम से मतभेदों के शांतिपूर्ण समाधान की दिशा प्रस्तुत करती है। इसी प्रकार धार्मिक समन्वय और मानव-एकता की उनकी अवधारणा विविधतापूर्ण समाज में सामाजिक सद्भाव को आधार प्रदान करती है। नारी-शिक्षा, सामाजिक जागरण और रूढ़ियों के परिवर्तन संबंधी आचार्य तुलसी के विचार भी वर्तमान सामाजिक संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं। उनके प्रयासों में महिला को समाज की निष्क्रिय इकाई के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक विकास की सक्रिय सहभागी के रूप में देखने की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है। महिला-शिक्षा और सामाजिक चेतना को उन्होंने व्यापक सामाजिक विकास से जोड़ा।

अणुव्रत आंदोलन की समकालीन प्रासंगिकता उसके नैतिक अनुशासन और व्यक्ति-निर्माण के आग्रह में निहित है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में संस्थागत नियमों की आवश्यकता के साथ नागरिक आचरण की गुणवत्ता भी महत्वपूर्ण होती है। अणुव्रत व्यक्ति को अपने आचरण के प्रति सजग बनाकर सामाजिक उत्तरदायित्व की चेतना विकसित करने पर बल देता है। इस कारण इसका मूल्य-आधारित पक्ष आज भी लोकतांत्रिक नागरिकता, सामाजिक सद्भाव और नैतिक सार्वजनिक जीवन के विमर्श से संबद्ध किया जा सकता है।

शोधार्थी के विश्लेषण में आचार्य तुलसी के चिंतन की समकालीन उपयोगिता का मुख्य आधार यह है कि उन्होंने सामाजिक परिवर्तन को केवल व्यवस्था-परिवर्तन के रूप में नहीं देखा। उनके अनुसार स्थायी परिवर्तन के

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

लिए व्यक्ति की चेतना और आचरण में परिवर्तन आवश्यक है। यही विचार लोकतांत्रिक संस्थाओं और लोकतांत्रिक संस्कृति के बीच संबंध को समझने में उपयोगी आधार प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर स्पष्ट होता है कि आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन में लोकतांत्रिक मूल्यों की अवधारणा राजनीतिक व्यवस्था तक सीमित न होकर व्यक्ति, समाज और नैतिक जीवन के व्यापक संदर्भ में विकसित हुई है। उनके चिंतन में व्यक्ति को सामाजिक व्यवस्था की आधारभूत इकाई मानते हुए उसके नैतिक परिष्कार को स्वस्थ समाज की पूर्वपीठिका के रूप में स्वीकार किया गया है। इस कारण उनके लोकतांत्रिक चिंतन में व्यक्ति की गरिमा, स्वतंत्रता, समानता, सामाजिक न्याय और उत्तरदायित्व जैसे मूल्य एक-दूसरे से संबद्ध दिखाई देते हैं।

आचार्य तुलसी की दृष्टि में लोकतांत्रिक समाज का निर्माण केवल संस्थागत व्यवस्थाओं से संभव नहीं है। इसके लिए ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो अपनी स्वतंत्रता के साथ अपने सामाजिक दायित्वों के प्रति भी सजग हो। आत्मानुशासन, संयम, सत्य और अहिंसा जैसे मूल्य इस दृष्टि से लोकतांत्रिक नागरिकता के नैतिक आधार का निर्माण करते हैं। उनके चिंतन में अधिकार और कर्तव्य के बीच संतुलन तथा व्यक्ति और समाज के बीच पारस्परिक उत्तरदायित्व लोकतांत्रिक जीवन की महत्वपूर्ण शर्तों के रूप में सामने आते हैं।

अहिंसा, सह-अस्तित्व, सहिष्णुता और मानव-एकता आचार्य तुलसी के सामाजिक चिंतन को लोकतांत्रिक बहुलता से जोड़ते हैं। विविध धार्मिक, सामाजिक और वैचारिक समूहों के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए उन्होंने संवाद, पारस्परिक सम्मान और समन्वय की दृष्टि को महत्व दिया। इस प्रकार लोकतंत्र उनके लिए केवल मतभेदों को स्वीकार करने वाली व्यवस्था नहीं, बल्कि मतभेदों के बीच सह-अस्तित्व की संस्कृति विकसित करने वाली सामाजिक चेतना भी है।

सामाजिक सुधार के क्षेत्र में आचार्य तुलसी का चिंतन विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने सामाजिक रूढ़ियों और कुरीतियों के विरुद्ध विवेकपूर्ण परिवर्तन की आवश्यकता पर बल दिया तथा नारी-जागरण, महिला-शिक्षा और सामाजिक समानता को सामाजिक विकास से जोड़ा। 'नया मोड़' के माध्यम से सामाजिक रूढ़ियों के प्रति जागरूकता और परिवर्तन की जो चेतना विकसित हुई, वह उनके समाज-दर्शन के सुधारवादी पक्ष को स्पष्ट करती है।

अणुव्रत आंदोलन आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन को व्यावहारिक सामाजिक आंदोलन में रूपांतरित करने वाला प्रमुख माध्यम रहा। अणुव्रत ने व्यक्ति के नैतिक अनुशासन को सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ा तथा सत्य, अहिंसा, संयम और सदाचार को सार्वजनिक एवं सामाजिक जीवन से संबद्ध किया। इसके माध्यम से व्यक्ति-निर्माण, जनजागरण और स्वस्थ सामाजिक वातावरण के निर्माण को परस्पर संबद्ध किया गया।

शोधार्थी के विश्लेषण में आचार्य तुलसी के लोकतांत्रिक चिंतन का केंद्रीय निष्कर्ष यह है कि लोकतंत्र की स्थायित्वपूर्ण सफलता केवल राजनीतिक संस्थाओं की कार्यक्षमता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उस सामाजिक और नैतिक संस्कृति पर भी निर्भर करती है जिसमें व्यक्ति स्वतंत्र होने के साथ उत्तरदायी, अधिकार-संपन्न होने के

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

साथ कर्तव्यनिष्ठ तथा विविधता के बीच सह-अस्तित्व के प्रति सजग हो। इस दृष्टि से अणुव्रत आंदोलन लोकतांत्रिक मूल्यों को व्यक्ति के दैनिक आचरण से जोड़ने का प्रयास प्रस्तुत करता है।

अतः आचार्य तुलसी के समाज-दर्शन और अणुव्रत आंदोलन का विश्लेषण यह संकेत देता है कि लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थायी स्थापना के लिए संस्थागत व्यवस्था के साथ नैतिक व्यक्ति और मूल्यपरक सामाजिक चेतना का विकास आवश्यक है। उनके चिंतन की समकालीन प्रासंगिकता इसी समन्वित दृष्टि में निहित है, जहाँ व्यक्ति-निर्माण, सामाजिक सुधार और लोकतांत्रिक जीवन एक-दूसरे से पृथक न होकर परस्पर संबद्ध प्रक्रियाओं के रूप में सामने आते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ-सूची (References):

1. आचार्य तुलसी. (2006). *आचार्य तुलसी का समाज दर्शन*. आदर्श साहित्य संघ, नई दिल्ली।
2. आचार्य तुलसी. (1964). *अणुव्रत के आलोक में*. आदर्श साहित्य संघ।
3. आचार्य तुलसी. (1996). *नया समाज : नया दर्शन*. आदर्श साहित्य संघ, चूरू।
4. आचार्य तुलसी. (1964). *अणुव्रत : स्वस्थ समाज रचना की आचार-संहिता*. अखिल भारतीय अणुव्रत समिति।
5. आचार्य महाप्रज्ञ. (1994). *समाज व्यवस्था के सूत्र* (द्वितीय संस्करण). तुलसी अध्यात्म नीड़म्, लाडनूं।
6. जैन, प. स. (2013). आचार्य तुलसी का अहिंसा चिन्तन और समाज. *तुलसी प्रज्ञा, 158–159*, 33–45. जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं।
7. कर्णावट, म. (2013). सामाजिक परिवर्तन और नया मोड़. *तुलसी प्रज्ञा, 158–159*, 67–82. जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं।
8. प्रसाद, वि. (2013). महिला सशक्तिकरण में आचार्यश्री तुलसी का योगदान. *तुलसी प्रज्ञा, 158–159*, 120–124. जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं।
9. जैन, ब. (2013). आचार्य तुलसी के सामाजिक सरोकार. *तुलसी प्रज्ञा, 158–159*, 125–132. जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं।
10. दाधीच, मु. कि. (2013). आचार्य तुलसी के सपनों का लोकतंत्र. *तुलसी प्रज्ञा, 158–159*, 144–148. जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं।
11. जैन, अ. (2013). अणुव्रत एवं नैतिकता के द्वारा समसामयिक समस्याओं का समाधान. *तुलसी प्रज्ञा, 158–159*, 166–169. जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं।
12. भारद्वाज, स. (2013). आचार्य तुलसी-वाङ्मय में सामाजिक चेतना के स्वर. *तुलसी प्रज्ञा, 158–159*, 170–175. जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं।
13. Behera, P. C. (2014). Acharya Tulsi, Anuvrata and social work. *Tulsi Prajña, 162–164*, 85–90. Jain Vishva Bharati Institute.

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

14. Samani, R. P. (2013). Anuvrata doctrine—A realist philosophical approach. *Tulsi Prajña, 158–159*, 266–271. Jain Vishva Bharati Institute.

15. Samani, R. P. (2013). Acharya Tulsi's philosophy of morality. *Tulsi Prajña, 158–159*, 272–279. Jain Vishva Bharati Institute.

16. Goyal, S. (2013). The great social reformer: Acharya Tulsi. *Tulsi Prajña, 158–159*, 286–293. Jain Vishva Bharati Institute.

17. Pradhan, B. and Kumar, V. (2013). Women education and the speculation of Acharya Tulsi: A view. *Tulsi Prajña, 158–159*, 294–300. Jain Vishva Bharati Institute.

18. Reading, M. (2019). The Anuvrat Movement: A case study of Jain-inspired ethical and eco-conscious living. *Religions, 10*(11), 636. https://doi.org/10.3390/rel10110636

19. Teorell, J. (2006). Political participation and three theories of democracy: A research inventory and agenda. *European Journal of Political Research, 45*(5), 787–810. https://doi.org/10.1111/j.1475-6765.2006.00636.x

20. Kiess, J. (2022). Learning by doing: The impact of experiencing democracy in education on political trust and participation. *Politics, 42*(1), 75–94. https://doi.org/10.1177/0263395721990287

21. Print, M. (2007). Citizenship education and youth participation in democracy. *British Journal of Educational Studies, 55*(3), 325–345. https://doi.org/10.1111/j.1467-8527.2007.00382.x

22. Ingham, S. (2022). Representative democracy and social equality. *American Political Science Review, 116*(2), 689–701. https://doi.org/10.1017/S000305542100109X

23.Drèze, J. and Sen, A. (2002). Democratic practice and social inequality in India. *Journal of Asian and African Studies, 37*(2), 6–37. https://doi.org/10.1177/002190960203700202